इकाई 5 समाजवादी विश्व-I

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 पहली समाजवादी क्रांति रूस में ही क्यों हुई?

- 5.2.1 राजनैतिक ढ़ांचा
- 5.2.2 किसान और मज़दूर वर्ग
- 5.2.3 राष्ट्रीय आत्म-निर्णय
- 5.2.4 विचार और संगठन

5.3 क्रांति के चरण और बोल्शेविक विजय

5.4 समाजवाद का निर्माण

- 5.4.1 परिवर्तन की प्रकृति-आरंभिक विधान
- 5.4.2 परिवर्तन की प्रकृति-लोकप्रिय पहल

5.5 युद्ध साम्यवाद 1918-1921

- 5.5.1 आर्थिक पहल और नीतिगत निर्णय
- 5.5.2 युद्ध साम्यवाद के राजनैतिक पक्ष

5.6 नई आर्थिक नीति

- 5.6.1 समाजवाद की ओर संक्रमण की रणनीति के रूप में नई आर्थिक नीति

5.7 समाजवाद के सांस्कृतिक आयाम

5.8 कॉमिन्टर्न

5.9 सारांश

5.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

जैसा कि आप जानते हैं बीसवीं शताब्दी के दौरान यूरोप की राजनैतिक व्यवस्था पर तीन प्रमुख विचारधाराओं का प्रभाव रहा है। इनमें से दो विचारधाराओं; उदारवादी जनतंत्र और दक्षिणपंथी शासन व्यवस्थाओं का अध्ययन आप कर चुके हैं। समाजवाद और समाजवादी दुनिया की चर्चा की जाएगी। जैसाकि आप जानते हैं उन्नीसवीं शताब्दी से ही विचार के रूप में समाजवाद का अस्तित्व मौजूद था। परंतु रूस में हुई 1917 की क्रांति के बाद ही इसे ठोस राजनैतिक व्यवस्था के रूप में ढ़ाला जा सका। इस इकाई में रूसी क्रांति की जानकारी देने के साथ-साथ 1928 तक की घटनाओं का विवरण प्रस्तुत किया गया है। 1928 के बाद हुए विकास की चर्चा अगली इकाई में की जाएगी। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- रूस में उपस्थित उन परिस्थितियों की जानकारी प्राप्त कर पाएंगे जिनके कारण पहली समाजवादी क्रांति संभव हुई;
- क्रांति के बाद रूस में समाजवाद के निर्माण की प्रक्रिया से अवगत हो सकेंगे;
- रूस में समाजवाद के निर्माण के महत्त्वपूर्ण चरणों के रूप में नई आर्थिक नीति और 'युद्ध साम्यवाद' का विवरण प्राप्त कर सकेंगे; और

- 'कम्युनिस्ट इंटरनेशनल' (कॉमिन्टर्न) के गठन द्वारा पूरी दुनिया में समाजवाद के फैलाने के लिए रूस के समाजवादी राज्य द्वारा किए गए प्रयत्नों का विवेचन कर सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना

आप समाज के बारे में समाजवादी दृष्टि का थोड़ा बहुत अध्ययन पहले ही कर चुके हैं। समाजवादी दलों द्वारा मज़दूरों से सम्पर्क विकसित करने से, आरंभिक बीसवीं शताब्दी के संघर्षों ने यूरोप के लोकप्रिय संघर्षों में नया आयाम जोड़ दिया। मज़दूर संघर्ष और समाजवादी दलों की गतिविधियां दोनों ही बीसवीं शताब्दी में ताकतवर जन आंदोलनों के रूप में उभरी। उनके सहयोग से क्रांति को नए प्रतीक मिले और मजदूर वर्ग को एक नई शक्ति मिली; उदाहरणस्वरूप प्रदर्शन, आम हड़ताल, मज़दूरों का रंगमंच, लाल झंडा, मज़दूर दिवस के रूप में मई दिवस, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में 8 मार्च। हालांकि इनकी गतिविधियां पूरे यूरोप में फैली हुई थीं परंतु इसका सबसे अधिक प्रभाव रूस पर पड़ा जहां के मूलगामी सुधारवादी आंदोलनों ने पूंजीवादी विरोधी रुख और समाजवादी दृष्टिकोण अपनाया। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत और आरंभिक बीसवीं शताब्दी में कई क्रांतिकारी लहरें आईं जिसकी परिणति पहली समाजवादी क्रांति के रूप में हुई। इस इकाई में हम इतिहास की प्रथम समाजवादी क्रांति की चर्चा करेंगे जिसे अक्टूबर क्रांति या 1917 की बोल्शेविक क्रांति के रूप में जाना जाता है। हम समाजवादी निर्माण के प्रथम अनुभव की भी चर्चा करेंगे और यह देखने का प्रयास करेंगे कि किस प्रकार इनकी नीतियां पूंजीवादी राज्यों से अलग थीं।

5.2 पहली समाजवादी क्रांति रूस में ही क्यों हुई?

रूसी समाज में सचमुच क्या कुछ हो रहा था जिसके कारण यह सब संभव हुआ? अपने अन्तिम दिनों में कार्ल मार्क्स ने उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में रूस में बन रहे क्रांतिकारी माहौल की प्रशंसा की थी परंतु समाजवादी विचारधारा का पूरा जोर इस बात पर रहा था कि परिपक्व और सर्वाधिक विकसित पूंजीवादी देशों में ही क्रांति होगी। ऐसी कल्पना की गई थी कि पूंजीवादी व्यवस्था जब पूरी तरह परिपक्व हो जाएगी तो वह अपने अंतर्विरोधों, संघर्षों और तनावों से कमज़ोर पड़ने लगेगी। उन राष्ट्रों में निजी स्वामित्व और समाजीकृत उत्पादन के बीच विषम स्थिति पैदा हो जाएगी। वहां मज़दूर वर्ग को अपने जंजीरों के सिवा और कुछ नहीं खोना होगा। परंतु वास्तव में प्रथम समाजवादी क्रांति 'पिछड़े हुए' रूस में हुई। यहां के समाज में पूंजीवाद मौजूद था परंतु अभी भी यहां सामंती सामाजिक और आर्थिक शक्तियां जस की तस मौजूद थीं। मजदूर वर्ग अभी भी ज़मीन के साथ जुड़ा हुआ था और कृषक वर्ग मुख्यतः निजी भू-स्वामित्व की इच्छा रखता था। निश्चित रूप से रूस में देरी से उभरे और विकसित हुए पूंजीवाद के अंतर्विरोधों के कारण वहां क्रांति का सामाजिक माहौल तैयार हुआ।

5.2.1 राजनैतिक ढ़ांचा

पश्चिमी यूरोप में पूंजीवाद के विकास के साथ उदारवादी-संवैधानिकतावाद और संसदीय जनतंत्रों का उदय और विकास हुआ। 1917 तक रूस में जार का एकतंत्रीय निरंकुश शासन कायम था। यूरोप के नागरिकों को सहज रूप में प्राप्त सभी व्यक्तिगत, नागरिक और मौलिक अधिकार तथा संगठन बनाने, हड़ताल करने और चुनाव का अधिकार जैसी सामूहिक अभिव्यक्तियों के सभी जनतांत्रिक रूपों पर रूस में प्रतिबंध था। संभवतः आप यह बात जानते हैं कि सम्पूर्ण रूसी समाज में केवल रूसी क्षेत्र ही शामिल नहीं था और इसमें

केवल रूसी बोलने वाले लोग ही नहीं रहते थे। इस साम्राज्य में कई गैर रूसी समुदाय और राष्ट्रीयताएं जैसे यूक्रेनियन, साइबेरियन, बाल्टिक राज्य आदि शामिल थे। रूस का निरंकुश शासन अपने साम्राज्य की सभी राष्ट्रीयताओं को दबाकर रखता था और यूरोप में होने वाले सभी जनतांत्रिक आंदोलनों के खिलाफ डटकर खड़ा था। इसीलिए इसे 'यूरोप का पुलिस मैन' कहा जाता था। अतएव नई मांगों और नई सामाजिक तथा आर्थिक ताकतों के उदय के परिप्रेक्ष्य में रूसी राज्य की प्रकृति लगातार असंगत होती जा रही थी।

5.2.2 किसान और मज़दूर वर्ग

परम्परागत तौर पर रूसी कृषि व्यवस्था में बंधुआ मज़दूरी की प्रथा प्रचलित थी जो भूमि और भूमिपति से बंधे हुए थे। कृषिदास की यह प्रथा 1861 में समाप्त कर दी गई और कृषिदास मुक्त हुए तथा उनका स्थान स्वतंत्र और गतिशील कृषक वर्ग ने ले लिया। परंतु 1861 के कृषि सुधारों से जार साम्राज्य की कृषि समस्या समाप्त नहीं हुई। कृषि में पूंजीवाद के विकास के बावजूद भूमिधर कुलीनतंत्र का आधिपत्य बना रहा, किसान गरीब बने रहे और कृषि पिछड़ी रही। यहां तक कि कृषि के वाणिज्यिक होने तथा 'कुलक' नामक अमीर कृषकों के उदय के बावजूद ग्रामीण इलाकों में भूमि, लगान, मज़दूरी और सार्वजनिक ज़मीनों पर अधिकार को लेकर (जो भूमिपति कुलीनतंत्र के पास सुरक्षित था) कुलीन वर्ग और कृषक वर्ग के बीच संघर्ष की स्थिति बनी रही। अभी भी अधिकांश ज़मीन पर और समग्र रूप से कृषि व्यवस्था पर भूमिपति कुलीनतंत्र का अधिकार था।

भूमिपति कुलीनतंत्र के सामाजिक और आर्थिक प्रभुत्व के कारण राजनैतिक क्षेत्र में भी कुलीनतंत्र का दबदबा बना रहा जबकि 1861 के बाद ग्रामीण ढ़ांचे में हुए टकराव के कारण आधुनिक किसान आंदोलन का जन्म हुआ जो धीरे-धीरे राजनैतिक रूप ग्रहण करने लगा। बड़े भूमिपतियों के स्वामित्व को समाप्त करने और किसानों के लिए ज़मीन की मांग उठने लगी जिसे बोल्शेविकों के सिवा न तो जार कुलीनतंत्र और न ही अन्य कोई राजनैतिक समूह मानने को तैयार था। इसके कारण किसान आंदोलन हुए और उनके द्वारा भूमि-अधिग्रहण की मांग अक्टूबर 1917 की बोल्शेविक क्रांति का प्रमुख उद्देश्य रहा। इसके अलावा इसने समाजवादी शासन व्यवस्था को मज़बूत बनाने में मदद की।

रूसी औद्योगीकरण की प्रकृति और समय के कारण मज़दूर आंदोलन के लिए उपयुक्त माहौल तैयार हुआ। यह मज़दूर आंदोलन उग्र और राजनैतिक था। रूसी समाज और राजनीति के विशिष्ट लक्षणों के कारण इस आंदोलन की प्रकृति सुधारात्मक की अपेक्षा क्रांतिकारी हो गई। देर से औद्योगीकरण होने और पश्चिमी देशों के स्तर तक पहुंचने की आवश्यकता के लिए औद्योगीकरण के आरंभिक चरणों में बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठानों की स्थापना की गई। इंग्लैंड या फ्रांस में इसका क्रमशः और धीमी गति से विकास हुआ था। रूस में तेज़ी से हुए इस औद्योगीकरण के कारण वर्ग चेतना का भी शीघ्रता से विकास हुआ और बुर्जूआ वर्ग द्वारा सामाजिक तथा राजनैतिक वर्चस्व कायम करने से पहले ही एक संगठित जन आंदोलन की शुरुआत हो चुकी थी। रूस में यह मजदूर आंदोलन बुर्जुआ वर्ग, संभ्रांत वर्ग, पूंजीवाद और तानाशाही के खिलाफ था। इसके अलावा कोई प्रभावी विधान या मजदूर संघ के पास कोई अधिकार न होने से आर्थिक मांगों को लेकर किया गया संघर्ष भी राजनैतिक रूप लेने लगा क्योंकि हड़ताल करने का मतलब था कानून तोड़ना। प्रतिनिधि संस्थाओं की कमज़ोरी के कारण मज़दूर वर्ग के आंदोलन ने व्यवस्था को उखाड़ फेंकने का क्रांतिकारी रास्ता अख्तियार किया। उन्होंने इंग्लैंड, फ्रांस और जर्मनी की तरह सामाजिक-राजनैतिक समूहों के लिए अधिक प्रतिनिधत्व के ज़रिए इस पर नियंत्रण करने की कोशिश नहीं की। वस्तुतः मज़दूर संघों का जन्म 1905 की क्रांति के बीच से ही हुआ था। बड़े कारखाने देहातों में, शहर से बाहर और नगर की सीमाओं पर लगाए गए

थे और इसमें कई प्रकार के मज़दूर काम करते थे (निपुण कारीगर, निपुण और अनिपुण कारखाना मज़दूर, कुस्तार या घरेलू व्यवस्था में काम करने वाले मज़दूर उसके अलावा टेलीग्राफ, रेलवे निर्माण कार्य में लगे मज़दूर)। इनमें से अधिकांश मज़दूरों का संबंध अभी तक अपनी ज़मीन से था। इस कारण इस आंदोलन को व्यापकता मिली और यह केवल बड़े शहरों तक ही सीमित नहीं रहा।

5.2.3 राष्ट्रीय आत्म-निर्णय

समाजवादी क्रांति की विजय के साथ-साथ जारशाही साम्राज्य के राष्ट्रीय उत्पीड़न से मुक्ति मिली। राजनैतिक और सांस्कृतिक भेदभाव के कारण बाल्टिक क्षेत्र, मध्य एशिया, ट्रान्सकौकेशिया और अन्य क्षेत्रों के लोग अपने को अलग-थलग महसूस करते थे। जार की आर्थिक नीतियों के कारण ये इलाके आर्थिक दृष्टि से पिछड़े बने हुए थे। जारशाही की आर्थिक नीतियों के कारण इन इलाकों में मुख्य वर्ग खेती पर आश्रित रहे और लोग भूमि से बंधे रहे। इन स्थानों पर राष्ट्रीय आत्म-निर्णय, अपनी भाषा और संस्कृति के अधिकारों की मांग करने और सामान्य अवसर उपलब्ध कराने और यहां तक कि पृथक राजनैतिक पहचान प्राप्त करने के लिए एक मज़बूत आंदोलन उठ खड़ा हुआ। बोल्शेविकों ने किसानों के लिए भूमि की मांग का समर्थन किया और संबंध विच्छेद के अधिकार तथा स्वैच्छिक संघ बनाने के अधिकारों का समर्थन किया। अतएव इन क्षेत्रों में किसानों ने जार की तानाशाही शासन व्यवस्था के खिलाफ समाजवादी विकल्प की विजय में निर्णायक भूमिका निभाई और इस क्रम में राष्ट्रवादी आकांक्षाओं के उदारवादी को दर किनार कर दिया।

5.2.4 विचार और संगठन

आरंभिक बीसवीं शताब्दी में समाजवादी क्रांतिकारी प्रमुख राजनैतिक प्रवृत्ति थी जो किसानों के वर्ग हितों का प्रतिनिधत्व करती थी और जो किसानों को क्रांति की प्रमुख प्रेरक शक्ति मानते थे। अन्य प्रमुख प्रवृत्तियों में विभिन्न विचारों वाले उदारवादी थे जो रूस में पश्चिम यूरोप के संसदीय नमूने का प्रजातंत्र चाहते थे। मार्क्सवादी या सोशल डेमोक्रेट (साम्यवादी) की रणनीति और प्रेरणा मार्क्स के कम्यूनिस्ट मेनिफैस्टो और उनके गोथा कार्यक्रम की आलोचना (साम्यवादी घोषणा पत्र) से प्रभावित थी। इसके अलावा अधिकांश मूलगामी सुधारवादी वुद्धिजीवी वर्ग मार्क्स की पूंजीवादी आलोचना से काफी प्रभावित था। यूरोप में 1848 की क्रांति में उन्होंने यह अनुभव किया कि बुर्जूआ वर्ग ने उस समय क्रांति के साथ धोखा किया था और मज़दूर लगातार एक क्रांतिकारी शक्ति बने हुए थे। अतएव रूस ने पश्चिमी यूरोप के पीछे हटते हुए उदारवाद की अपेक्षा वहां के सर्वाधिक मूलगामी आमूल परिवर्तनवादी विचारों को ग्रहण किया।

रूस में आरंभ से ही बुर्जूआ उदारवाद कमज़ोर था और आमूल परिवर्तनवादी वुद्धिजीवी वर्ग का समाजवादी रूझान और क्रांतिकारी नेतृत्व निर्णायक साबित हुआ। बोल्शेविकों की विजय ने उत्तर-क्रांतिकारी शासन व्यवस्था की राजकीय नीति के रूप में समाजवाद की विजय का प्रतिनिधत्व किया।

लेनिन बोल्शेविक पार्टी के सर्वप्रमुख नेता थे। बोल्शेविक ने रूस में मार्क्सवाद को मात्र आरोपित नहीं किया। उन्होंने मार्क्सवाद के ढ़ांचे में रूस की विशिष्ट क्रांतिकारी समस्याओं का निदान ढूंढ़ने की कोशिश की। उन्होंने तर्क दिया कि रूस के पिछड़े माहौल में और बुर्जूआ वर्ग के अपेक्षाकृत कमज़ोर होने के कारण बुर्जूआ जनतांत्रिक क्रांति लाने में इनकी भूमिका बहुत स्पष्ट नहीं बल्कि ढुलमुल होगी। मज़दूर आंदोलन का सामना कर रहा बुर्जूआ वर्ग फ्रांसीसी और अंग्रेजी बुर्जूआ वर्ग की भूमिका नहीं दुहरा सकता। अतएव मज़दूर वर्ग का आधिपत्य क्रांति के प्रथम बुर्जूआ जनतांत्रिक चरण के साथ-साथ इसके दूसरे समाजवादी

चरण के लिए भी ज़रूरी था। किसानों की संख्या ज़्यादा थी और मज़दूरों की कम। इसलिए क्रांतिकारी रणनीति के तहत मज़दूरों और किसानों का गठबंधन किया गया। इस प्रकार उन्होंने दो चरण की क्रांति और मजदूर वर्ग के नेतृत्व को अपनी रणनीति में शामिल किया। आरंभिक बीसवीं शताब्दी के क्रांतिकारी आंदोलनों ने उनकी रणनीति को काफी हद तक सही सिद्ध किया।

बोध प्रश्न 1

1) रूस का राजनैतिक ढ़ांचा अन्य यूरोपीय देशों से किस प्रकार अलग था? पांच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

2) रूस में सक्रिय विभिन्न राजनैतिक समूहों पर पांच पंक्तियां लिखिए।

....

....

....

....

....

5.3 क्रांति के चरण और बोल्शेविक विजय

रूसी क्रांति के तीन अलग-अलग चरण माने जा सकते हैं जिसे पूरा करने में बारह वर्ष लग गए। प्रथम चरण के दौरान ड्यूमा कही जानी वाली संसद का निर्माण हुआ। 1917 की फरवरी क्रांति को दूसरा चरण माना जा सकता है जिसमें केंद्र में जार के शासन के साथ-साथ अस्थायी सरकार की स्थपना की गई। अक्टूबर 1917 में क्रांति का तीसरा और अंतिम चरण पूरा हुआ जिसमें जार के शासन को उखाड़ फेंका गया और जन गणतंत्र की स्थापना हुई। आइए, इन तीनों चरणों पर विस्तार से विचार किया जाए।

9 जनवरी 1905 को मज़दूर शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे थे; उन पर गोलियां चलाई गईं। इससे मज़दूर भड़क उठे और 1905 में पहली बार निरकुंश एकतंत्र पर आक्रमण किया गया। इसे खूनी रविवार के नाम से जाना जाता है। मज़दूर और किसान 'जनतांत्रिक गणतंत्र' की मांग करने लगे। उन्होंने किसानों, मज़दूरों और सैनिकों का निर्वाचित और जन आधारित राजनैतिक संगठन बनाया जिसे प्रथम सोवियत के नाम से जाना जाता है। बाद में लेनिन ने इसे 'क्रांतिकारी शक्ति की जन्मदात्री' कहा और जो अन्ततः क्रांति के बाद राज्य के निर्माण का आधार बना जिससे समाजवादी राज्य ने सोवियत रूस का नाम ग्रहण किया। प्रथम विश्व युद्ध ने रूस की अर्थव्यवस्था और रूस के मज़दूरों की आजीविका को बुरी तरह प्रभावित किया जिसके कारण मौजूदा शासन व्यवस्था के खिलाफ विरोध का माहौल बना और इससे रूसी क्रांति का मार्ग प्रशस्त हुआ।

1917 की फरवरी क्रांति ने निरकुंश एकतंत्र पर अन्तिम प्रहार किया। पेट्रोगार्ड में महिला मज़दूरों के रोटी की कमी को लेकर किए गए प्रदर्शन से इस क्रांति का आरंभ हुआ जो

दूसरे शहरों और गांवों तक फैल गया। समाज के सभी वर्गों ने हड़ताल कर दी, किसान आंदोलित हो उठे और सेना के क्रांतिकारी कदम से निरकुंश एकतंत्र की रही सही उम्मीद भी समाप्त हो गई। रूसी निरकुंश एकतंत्र को उखाड़ फेंका गया और इसके स्थान पर उदारवादी बुर्जूआ के वर्चस्व वाली अस्थायी सरकार की स्थापना की गई।

फरवरी 1917 की क्रांति में पहली बार राजनैतिक स्वतंत्रता अर्जित की गई। मौलिक और नागरिक अधिकारों का सृजन किया गया। हज़ारों छोटे-छोटे संगठनों द्वारा कारखानों, बैरकों, गांवों और गलियों में सैकड़ों और हज़ारों पैम्फलेट बांटे गए। कारखाना समिति, ग्रामीण परिषद, सैनिक समूहों जैसे मंचों के ज़रिए लोगों ने अपनी नियति का निर्माण करना चाहा। एक बार फिर शहरों और गांवों में सोवियतों का चुनाव हुआ और एक बार फिर केंद्रीय सोवियत (जैसा कि 1905 में था) क्रांतिकारी शक्ति के वैकल्पिक स्रोत के रूप में उभरी और इसने अस्थायी सरकार का विरोध किया। अस्थायी, सरकार में प्रतिनिधित्व पाए उदारवादी बुर्जूआ वर्ग के लोग अपनी क्रांति समाप्त कर चुके थे; जबकि मज़दूर अभी इसकी शुरुआत ही कर रहे थे। फरवरी की क्रांति के बाद स्थापित नए शासन का यही प्रमुख अंतर्विरोध था और यह बहुत दिन तक कायम न रह सका। किसान निराश थे कि उन्हें ज़मीन नहीं मिली; सम्पूर्ण मज़दूर वर्ग और सैनिक निराश थे क्योंकि युद्ध अभी जारी था; हड़तालों और प्रदर्शनों के ज़रिए असंतोष प्रकट किया गया; किसानों ने ज़मीनों पर कब्जा कर लिया; भोजन की कमी और इसके मूल्य में वृद्धि होने से दंगे हुए, युद्ध समाप्त न होने से सैनिकों को घोर निराशा हुई जो भूमि वितरण में भी हिस्सा लेना चाहते थे। बोल्शेविकों ने जनता की भावनाओं के अनुरूप नारा दिया और वे उनके चहेते बन गए। उनका नारा थाः

- किसान के लिए ज़मीन
- युद्ध को तुरंत बंद किया जाए
- उद्योगों पर मज़दूरों का नियंत्रण हो
- राष्ट्रीयताओं को आत्म-निर्णय का अधिकार मिले, और सबसे ऊपर
- रोटी (ब्रेड)

शांति! भूमि! रोटी! प्रजातंत्र! तात्कालिक मांगे बन गईं। सभी जनसंगठनों में बोल्शेविकों को बढ़त हासिल हो गई और अधिकांश मज़दूर और सैनिक उनके पक्ष में थे। हालांकि एक विरोधी प्रेस ने इसके विपरीत माहौल बनाने की कोशिश की परंतु इस क्रांति को जनाधार प्राप्त था और यह लगभग रक्तहीन क्रांति थी। सेना (जिसमें ज़्यादातर किसान शामिल थे) सहज़ रूप में क्रांतिकारी ताकतों की ओर खिंची चली गई। अस्थायी सरकार उखाड़ फेंकी गईं। इतिहास में पहली बार समाजवादी क्रांति वास्तविक रूप में सामने आई। नए राज्य ने अपने को मज़दूरों का राज्य कहा। एक अमेरिकी पत्रकार जॉन रीड ने अपनी पुस्तक टेन *डेज दैट शुक द वर्ल्ड* में 1917 की अक्टूबर क्रांति का बड़ा ही सजीव चित्रण किया है।

5.4 समाजवाद का निर्माण

किसी भी देश में क्रांति के समान ही समाजवाद की स्थापना में शौर्य और साहस भरे संघर्ष की ज़रूरत होती है। बोल्शेविकों के सामने अपने प्रयोगों के लिए किसी वास्तविक समाजवादी समाज का कोई ढ़ांचा उपलब्ध नहीं था। मार्क्स ने पूंजीवाद का विश्लेषण अवश्य किया था परंतु व्यवहार में समाजवाद का कोई विस्तृत और व्यवहारिक नमूना उपलब्ध नहीं था। आरंभिक रूसी क्रांतिकारियों के सामने केवल उनके आदर्श और

समाजवादी विचारकों के प्रमुख सिद्धांत थे, जिन पर उन्हें निर्भर रहना था। अन्य यूरोपीय देशों की तुलना में आर्थिक विकास की दृष्टि से रूस अभी भी एक पिछड़ा हुआ देश था और आर्थिक विकास की एक ऐसी रणनीति बनाना आसान नहीं था जो पूंजीवादी व्यवस्था को पीछे छोड़ सके। इसके अलावा समाजवादी रूस को पूंजीवादी देशों के आक्रमण का एक साथ सामना करना पड़ा। इस देश के प्रति उनका रवैया केवल मात्र शत्रुतापूर्ण नहीं था बल्कि वास्तव में वे इस नए राज्य के खिलाफ युद्ध कर रहे थे; दूसरी ओर रूस के पूर्ववर्ती भूमिपतियों और पूंजीपतियों ने गृह युद्ध छेड़ रखा था।

तीव्र आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय, व्यक्तिगत मौलिक अधिकारों की गारंटी, सैद्धांतिक तौर पर जितने आसान लगते हैं व्यवहार में उन्हें प्राप्त करना इतना आसान नहीं था। समाजवाद के निर्माण के संबंध में तीखे राजनैतिक मतभेद थे; रणनीति और उद्देश्य पर बहस छिड़ी हुई थी और नए-नए प्रयोग तथा नीतियां बन रही थीं। पिछड़ेपन के कटु यथार्थ, सम्पूर्ण पूंजीवादी विश्व की शत्रुता और गृह युद्ध के परिप्रेक्ष्य में कई सपने अधूरे रह गए, कई आदर्श धूल चाटने लगे, कई इच्छाएं अस्वीकार कर दी गईं। यूरोप के कई देशों में क्रांतियां सफल नहीं हुईं, हालांकि बोल्शेविकों को 'समाजवादी विश्व क्रांति' में अपनी कई नीतियों की सफलता पर विश्वास था। आरंभिक सोवियत समाजवादी राज्य अकेला पड़ गया और इसमें आरंभिक प्रयोग की कई कमियां भी मौजूद थीं। मज़दूर राज्य को कई प्रकार के खतरों से बचाना था। इस क्रांति की रक्षा में अनेक लोग मारे गए थे, सम्भवतः जितने क्रांति करने में नहीं मरे थे। परंतु उन्होंने दुनिया को यह दिखा दिया कि विकास और आधुनिकता का यह भी एक वैकल्पिक रास्ता हो सकता है। उनकी उपलब्धियां कुछ मायनों में निश्चित रूप से मील का पत्थर थीं।

5.4.1 परिवर्तन की प्रकृति-आरंभिक विधान

पहले विधानों का उद्देश्य, पूंजीवाद के वैधानिक और आर्थिक आधारों को समाप्त करना और समाजवाद की आधारशिला रखने के लिए कानून बनाना था। इसका उद्देश्य पहले की विदेश नीति और निजी मुनाफे, व्यक्तिवाद और उपभोक्तावाद जैसे समस्त पूंजीवादी मूल्यों में आमूल परिवर्तन करना था।

सबसे पहले उद्योगों में निजी संसाधनों को समाप्त किया गया और उन पर मज़दूरों का नियंत्रण स्थापित किया गया। कारखानों पर मज़दूर राज्य का आधिपत्य हो गया और मज़दूरों को प्रतिनिधित्व देकर उत्पादन प्रक्रिया में मज़दूरों का नियंत्रण स्थापित करने का प्रयोग किया गया और उन्हें कारखानों में अधिकार दिए गए। सोवियत रूस और अन्य समाजवादी देशों में सामाजिक नियोजन के तहत उद्योग पर राज्य का अधिकार बना रहा परंतु युद्ध के दिनों में और बाद के वर्षों में केंद्रीयकृत नियोजन के समय मज़दूरों के नियंत्रण से कई मुश्किलें सामने आईं।

दूसरा महत्वपूर्ण हस्तक्षेप कृषि के क्षेत्र में था। नवम्बर 1917 की भू राज्याज्ञा के द्वारा भूमिपति प्रथा समाप्त कर दी गई, ज़मीन का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया और निजी रूप से खेती करने के लिए तथा पीढ़ी दर पीढ़ी उपयोग करने के लिए ज़मीन किसानों के बीच बांट दी गई। परिवार के सदस्यों की संख्या के आधार पर ज़मीन वितरित की गई। इस ज़मीन और इस पर किए जाने वाले श्रम से होने वाली आय पर निजी या व्यक्तिगत अर्थात परिवार के सदस्यों का अधिकार होता था; परंतु वे यह ज़मीन बेच नहीं सकते थे और न ही दूसरों के श्रमों का शोषण करने के लिए इसका उपयोग किया जा सकता था। इस प्रकार, कृषि व्यवस्था में शोषण आधारित संबंधों को समाप्त कर दिया गया; और भूमि निजी सम्पत्ति नहीं रह गई, हालांकि उत्पादन और स्वामित्व का समाजीकरण नहीं किया गया था।

28 दिसम्बर 1917 को सभी निजी बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया और बैंक के सभी भागीदारों (शेयर होल्डर) का स्वामित्व समाप्त हो गया और सभी विदेशी ऋणों को नकार दिया गया। रूसी क्रांति ने वर्ग आधारित समाज को भी नष्ट कर दिया। वेतन में अंतर जरूर बना रहा और युद्ध की परिस्थितियों और सीमित उत्पादकता के कारण लोगों को काम और योग्यता के अनुरूप वेतन नहीं मिल सका परंतु पूंजीवाद की अपेक्षा काफी हद तक सामाजिक न्याय की मांग पूरी हुई क्योंकि शारीरिक श्रम की अब ज़्यादा देर तक उपेक्षा नहीं की जा सकी, मज़दूरों और सफेदपोशों के वेतन में काफी कम अंतर रहा और कोई भी बिना काम किए या अपने लिए दूसरे से काम कराकर कमाई नहीं कर सकता था।

राजनैतिक स्तर पर नए राज्य ने अपने आप को 'सर्वहारा का अधिनायकत्व' अर्थात् समाजवादी जनतंत्र के रूप में परिभाषित किया। इसमें मुट्ठी भर लोगों की अपेक्षा जनता के बहुमत के हितों को प्राथमिकता दी गई; जनता में मज़दूर और कामगार लोग शामिल थे। दूसरे, इसके ज़रिए क्रांति ने काम करने वाले लोगों का राजनैतिक आधिपत्य कायम किया जबकि पूंजीवादी व्यवस्था और बुर्जूआ जनतंत्र में राष्ट्रीय संसाधनों पर निजी नियंत्रण होता है। तीसरे, इस नए राज्य ने जनतंत्र की एक अधिक सकारात्मक अवधारणा सामने रखी जहां फ्रांसीसी विरासत को समाहित करते हुए व्यक्ति की जरूरतों को पूरा करने की ज़्यादा ज़िम्मेदारी राज्य ने अपने ऊपर ले ली; यहां *लैसेज-फेयर* (अहस्तक्षेप नीति) की अवधारणा के लिए कोई जगह नहीं थी जिसमें राज्य के अहस्तक्षेप से व्यक्ति की स्वतंत्रता जुड़ी होती है और व्यक्ति को काफी हद तक अपनी रक्षा करने के लिए अकेला छोड़ दिया जाता है।

क्रांति के कुछ महीनों के भीतर सरकार ने पुरानी सरकार की सभी गुप्त संधियां प्रकाशित कर दी और यह घोषणा की कि सोवियत रूस और अन्य देशों के बीच होने वाली सभी संधियां स्पष्ट और सार्वजनिक होंगी। इसी शांति संबंधी राज्याज्ञा से उन्होंने शांति प्रस्ताव सामने रखा जिसमें राज्य-हरण, आधिपत्य या हर्जाने को कोई स्थान नहीं दिया गया और उन क्षेत्रों से अपना दावा वापस ले लिया जिसके लिए जार की सरकार और अस्थायी सरकार भी लड़ रही थी। सार्वजनिक तौर पर वे उपनिवेशवाद के खिलाफ खड़े हुए और सभी राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों का उन्होंने समर्थन किया। यदि रूसी क्रांति न होती तो प्रथम विश्वयुद्ध के अंत में विलसन के चौदह सूत्र सामने नहीं आते। जार साम्राज्य में शामिल सभी क्षेत्रों में रहने वाली राष्ट्रीयताओं के आत्म निर्धारण और संबंध-विच्छेद के अधिकार को बोल्शेविकों ने कबूल किया।

5.4.2 परिवर्तन की प्रकृति-लोकप्रिय पहल

बोल्शेविक नेतृत्व ने, पुरानी व्यवस्था के संस्थागत ढ़ांचे को तोड़कर और नई की स्थापना कर, अपना वायदा किया हुआ अधिदेश पूरा किया। किसानों और मज़दूरों ने अपने ढंग से क्रांतिकारी परिवर्तन में भूमिका अदा की। आरंभिक वर्षों में स्थानीय स्तरों पर स्वतः स्फूर्ति रूप से और संगठित गतिविधियों द्वारा क्रांति आगे बढ़ती चली गई। भूमि कम्यूनों, ग्राम सभाओं और किसान सोवियतों ने गांवों में सामाजिक और राजनैतिक बदलाव के स्वतंत्र अंग के रूप में कार्य करना शुरू किया। बोल्शेविकों द्वारा मान्यता प्राप्त कृषि क्रांति की शुरुआत वस्तुतः इन्ही से हुई थी और इसी से क्रांति के बाद का ग्रामीण ढ़ांचा निर्मित हुआ था। कुछ ही वर्षों में लाखों एकड़ खेतों की मिल्कियत बदली और उन्हें किसानों में बांट दिया गया। गांव में पुरानी राज्य व्यवस्था पूर्णतः नष्ट हो गई।

शहरों में भी इसी प्रकार की प्रवृत्ति देखने को मिली। सोवियतों को सभी अधिकार देने और मज़दूरों के नियंत्रण के नारे गूंजने लगे। इन नारों को कार्य रूप देने के लिए स्थानीय रूप से दो तिहाई कारखानों का राष्ट्रीयकरण किया गया और मज़दूरों ने कारखानों और उसके

उत्पादन पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। मज़दूर संघ, कारखाना समितियों, मज़दूर सोवियतों और दलीय संगठन द्वारा जगह-जगह पर पूंजी का स्वामित्वहरण किया गया।

आमतौर पर चारों ओर जनतंत्रीकरण, विकेंद्रीयकरण, स्थानीय पहल और लोकप्रिय निर्णय लेने की लहर थी। सम्पूर्ण जार साम्राज्य में यही क्रांति की सक्रियता और बोल्शेविकों के विधानों पर आधारित नए संस्थागत ढ़ांचों का अधार बना। बोल्शेविक गहरे रूप में इस प्रक्रिया से जुड़े हुए थे, हालांकि इन प्रयत्नों के पीछे कई प्रकार की खींचतान चल रही थी और केंद्रीय नेतृत्व राष्ट्रीय स्तर पर प्रशासनिक ढ़ांचे, सार्वजनिक वितरण प्रणाली और मज़दूर किसान गठबंधन को संस्थागत रूप प्रदान कर क्रांति से प्राप्त लाभों को ठोस रूप देने का प्रयत्न कर रहा था।

5.5 युद्ध साम्यवाद 1918-1921

क्रांतिकारी परिवर्तन की यह समूची प्रक्रिया 1918 के मध्य तक आते-आते संकट में फंस गई। क्रांतिकारी ताकतों को गृह युद्ध का सामना करना पड़ा। भूमिपति अभिजाततंत्र और बुर्जूआ वर्ग की सशस्त्र सेनाओं और पूंजीवादी देशों की सेनाओं ने समाजवादी शासन को अपदस्थ करने के लिए हस्तक्षेप किया। इस कारण उत्पादन में भारी कमी आई, वितरण व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई और आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र सोवियत सरकार के हाथ से छिन गए और सोवियत नियंत्रित क्षेत्र की अनिवार्य वस्तुओं और भोजन की आपूर्ति काट दी गई। चारों ओर भूख, भुखमरी, मुद्रास्फीति और बीमारी का तांडव नृत्य होने लगा। यातायात अवरुद्ध हो गया। चारों ओर अव्यवस्था फैल गई। किसानों और मज़दूरों ने अपने नए प्राप्त अधिकारों की रक्षा करने के लिए अलग-अलग जगहों पर अपने ढंग से संघर्ष किया और परिणामस्वरूप सभी मोर्चों पर वर्ग संघर्ष छिड़ गया।

स्थिति पर नियंत्रण करने के लिए जून 1918 में बोल्शेविकों ने कई आर्थिक और राजनैतिक कदम उठाए जिन्हें युद्ध साम्यवाद कहा गया। युद्ध के दौरान और युद्ध की स्थितियों से निपटने के लिए ये कदम उठाए गए थे। मार्क्स और अन्य साम्यवादियों ने विकसित समाजवाद या साम्यवाद के दौर में पहचानी गई कुछ विशेषताओं को यह दर्शाता था।

5.5.1 आर्थिक पहल और नीतिगत निर्णय

भोजन की समस्या निस्संदेह युद्ध के कारण और भी विकट हो गई परंतु इस समस्या का संबंध क्रांति द्वारा निर्मित ढ़ांचागत व्यवस्थाओं से भी था। किसानों के बीच भूमि वितरित करने से कृषि उत्पादन कम हुआ, क्योंकि यह छोटा कृषक उत्पादन था। जिसमें किसान अधिक आमदनी और अपना जीवन स्तर सुधारने के लिए बेहतर उपभोक्ता वस्तुओं की आकांक्षा से प्रेरित होकर ही ज़्यादा उत्पादन करना चाहता था। युद्ध के दौरान आर्थिक दृष्टि से समृद्ध संसाधनों के क्षेत्रों की हानि और उत्पादक आधार को व्यापक बनाने और युद्ध के लिए उत्पादन पर बल देने से उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन में गिरावट आई। इस कारण किसानों ने बाज़ार के लिए उत्पादन करना बंद कर दिया और केवल अपनी ज़रूरत भर का उत्पादन करने लगे जिसके कारण शहरी क्षेत्रों और युद्ध क्षेत्रों में भोजन की भारी कमी हो गई।

शहर में रहने वाले गरीबों और सैनिकों को भोजन उपलब्ध कराने के लिए सोवियत सरकार किसानों से अधिशेष अनाज जबरन वसूल करने लगी और उद्योग को पुनः जीवित करने के लिए सभी उद्यमों पर राज्य का नियंत्रण स्थापित कर दिया गया। सरकार ने सभी अनाजों और खाद्यान्नों को निर्धारित दाम पर वसूलना शुरू किया। खाद्यान्न वसूलने के लिए शहरी

दस्तों का निर्माण किया गया, निजी व्यापार पर प्रतिबंध लगाया गया। अनाज के सार्वजनिक वितरण की व्यवस्था की गई। इसके जवाब में किसानों ने अपनी उत्पादकता और भी कम कर दी। इसके कारण अनाज का उत्पादन बहुत तेज़ी से गिरा जिससे खाद्यान्न संकट और भी गहरा हो गया और अन्ततः 1920-21 में अकाल पड़ गया। इस समय किसानों ने बड़े पैमाने पर जमाखोरी की और अनाज़ को काला बाज़ार में ऊँचे दामों पर बेचा और इस प्रकार वसूली प्रक्रिया की राज्य अधिसंरचना पूरी तरह बिखर गई। गृह युद्ध में जीत हासिल करने के बाद किसान सोवियत सरकार के विरोध में खुलकर सामने आ गए और : अभी तक वे बोल्शेविकों के साथ थे क्योंकि वे जानते थे कि भूमिपतियों की वापसी को केवल बोल्शेविक ही रोक सकते थे। कई प्रकार के प्रयोग किए गए; जैसे सहकारी संस्थाएं स्थापित की गईं और सामूहिकता की प्रेरणा और अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए राज्य ने खेती भी शुरू की; परंतु कृषि क्षेत्र में इसका हिस्सा काफी कम था।

अधिक से अधिक संसाधन जुटाने के लिए औद्योगिक उद्यमों का राष्ट्रीयकरण किया गया। मार्च 1918 के एक निर्णय के द्वारा रेलवे को मज़दूरों के नियंत्रण से छीन लिया गया और इसे अर्द्धसैनिक नेतृत्व के नियंत्रण में ले लिया गया। सितम्बर तक लगभग 80-90 प्रतिशत तक बड़े उद्योगों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया और 1920 तक 5 से कम मज़दूरों वाली कार्यशालाओं को भी राज्य के अधीन ले लिया गया। इस अति राष्ट्रीयकरण से एक अलग तरह की अव्यवस्था फैली क्योंकि केंद्रीयकृत निर्णय प्रक्रिया और प्रशासनिक अंगों के लिए कच्चे माल का आवंटन, उत्पादन और विपणन करना लगभग असंभव था। इस अव्यवस्था के दौर में अधिकांश हस्तांतरण और लेखा विवरण कागजी घोड़े साबित हुए और रूबल के ध्वस्त होने के बाद वस्तुओं के लेन देन द्वारा (बार्टर व्यवस्था) ही विनिमय होने लगा। 1920-21 में विनिर्माण और खनन उद्योगों का उत्पादन युद्ध के पहले के उत्पादन से और भी गिर गया। किसान और मज़दूर के बीच के टकराव की संभावना और बढ़ गई।

5.5.2 युद्ध साम्यवाद के राजनैतिक पक्ष

आमतौर पर युद्ध साम्यवाद को इसके आर्थिक उपायों और इसकी प्रतिक्रिया के संदर्भ में ही देखा जाता है। वास्तव में इसका आयाम काफी विस्तृत था। इसमें अंतर्निहित कठिनाइयों के कारण ही केवल इसका विरोध नहीं हुआ। जनतंत्र की अवधारणा, व्यक्तियों के सम्बंधों, राज्य और लोकप्रिय संगठनों पर बहस की गई। युद्ध साम्यवाद में विशेषज्ञ या क्रांतिकारी (रेड) का नियंत्रण हो इसकी दुविधा उत्पन्न हो गई। अपनी ज़रूरतों और समाजवादी निर्माण की ज़रूरतों के कारण किसान और मज़दूरों के बीच संघर्ष हुआ जिसने सोवियतों और दल संगठनों के गठन और स्वरूप को प्रभावित किया। आर्थिक स्तर पर हुई असफलता ने जहां एक ओर कृषक युद्धों और शहरी असंतोष को बढ़ावा दिया वहीं कालाबाज़ारी के उदय ने समाजवादी आदर्शों पर कुठाराघात किया। स्वेच्छा की भावना पर भी संकट के बादल गहराने लगे क्योंकि यूरोप में विश्व समाजवादी क्रांति' फलीभूत न हो सकी। लाल सेना के लिए भर्ती की समस्या पैदा हो गई। मज़दूर राज्य नियंत्रण के सिद्धांत का विरोध करने लगे और चारों ओर किसानों के विद्रोह के बाद फरवरी 1921 में क्रोंशताद नगर के नौ सैनिकों के विद्रोह ने अंतिम कारक के रूप में कार्य किया। लेनिन को बाध्य होकर नीतिगत परिवर्तन की घोषणा करनी पड़ी। परंतु अधिकांश बोल्शेविकों ने बाद में यह महसूस किया कि इस संकट की घड़ी में सभी अस्थाई उपायों खासकर संस्थागत ढ़ांचों में बदलाव लाना और तत्संबंधी नीतियों में परिवर्तन करना संभव नहीं था। युद्ध साम्यवाद के समय से ही समाजवादी जनतंत्र का राजनैतिक स्वरूप संकटग्रस्त था और यूरोप में क्रांतिकारी आंदोलन के मद्दे नज़र बोल्शेविकों को खतरा महसूस हो रहा था।

बोध प्रश्न 2

1) रूसी क्रांति की शुरुआत कैसे हुई? 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

2) सोवियत रूस में समाजवादी राज्य ने कौन से नए कदम उठाए?

....

....

....

....

....

3) समाजवादी सरकार ने युद्ध साम्यवाद की शरण क्यों ली?

....

....

....

....

....

5.6 नई आर्थिक नीति

राजनैतिक और आर्थिक संकट से निपटने के लिए नई आर्थिक नीति का निर्माण हुआ था परंतु इसका मुख्य उद्देश्य आर्थिक बदलाव लाना था जिसके कारण समाजवाद की ओर बढ़ने की रणनीति में परिवर्तन आया। इस नई आर्थिक नीति के द्वारा विभिन्न ताकतों के सामाजिक-आर्थिक संतुलन में बदलाव लाया गया।

मार्च 1921 से परिवर्तन की प्रक्रिया आरंभ हुई। अनाज़ वसूली के स्थान पर एक निश्चित कर लगाया गया। कर के रूप में अनाज़ प्राप्त किया गया। यह कर अनाज़ वसूली की तुलना में काफी कम था। अब किसान अतिरिक्त अनाज अपने पास रख सकते थे और निजी तौर पर उसे बेच सकते थे। चूँकि अभी भी कृषि व्यक्तिगत उत्पादन पर आधारित थी जिसमें बाज़ार में अनाज बेचकर और व्यापार कर 'मुनाफा' कमाया गया जो दूसरों के श्रम के शोषण पर आधारित था।

1924 में वस्तु कर के स्थान पर मुद्रा कर लगाया गया और निजी व्यापार को कानूनी बनाया गया। 1925 में ज़मीन को पट्टे पर देने और मज़दूर रखने पर लगे प्रतिबंध को ढ़ीला कर दिया गया तथा कृषि कर और भी घटा दिया गया। अब शुद्ध आय पर कर लगाया गया। इसकी दरें अलग-अलग थीं। एक चौथाई हेक्टेयर से ज़्यादा ज़मीन रखनेवालों पर 5% और तीन हेक्टेयर से ज़्यादा ज़मीन रखनेवालों पर 17% कर लगाया गया। कर की अलग.

अलग दरों के बावजूद, अदायगी के बाद कई कारणों से जैसे व्यापार की स्वतंत्रता और अधिक जमीन पट्टे पर लेने और श्रम को मजदूरी पर रखने किसानों के बीच विभेदीकरण बढ़ा और कृषक समुदाय के भीतर एक धनी या 'कुलक' वर्ग का उदय हुआ। एक बार कर देने के बाद किसान व्यापार करने और अपना ग्राहक तय करने के लिए स्वतंत्र था। वह अधिक ज़मीन पट्टे पर दे सकता था और श्रम खरीद सकता था। इसके परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के बीच बाज़ार सम्पर्क फिर से स्थापित हुआ, विनिमय में मुद्रा की भूमिका बढ़ी, केंद्रीयकृत वितरण प्रणाली में कटौती हुई और व्यक्तिगत अनुबंधी को बढ़ावा मिला।

इसके साथ-साथ औद्योगिक क्षेत्र और इसके संगठनात्मक रूपों में भी परिवर्तन आया। 17 मई 1921 को छोटे उद्योगों के राष्ट्रीयकरण की राज्याज्ञा को निरस्त कर दिया गया और छोटी इकाइयों को वस्तुतः इससे मुक्त कर दिया गया और इनमें से कुछ को उनके पूर्व मालिकों को सौंप दिया गया। केवल बैंकिंग, विदेश व्यापार और बड़े पैमाने पर होने वाले व्यापार तथा भारी उद्योग पर राज्य का नियंत्रण रहा जिसे लेनिन अर्थव्यवस्था के 'प्रभावशाली शिखर' कहता था। जुलाई 1921 तक सभी लोगों को पट्टे पर लघु उद्योग लगाने का अधिकार दिया गया। राज्य उद्यमों को वाणिज्यिक लेखा-जोखा के आधार पर काम करना था; वेतन और मज़दूरी नगद में भुगतान किया जाना था। उद्योगों से यह उम्मीद की जाती थी कि वे अपने बल पर कच्चा माल हासिल करें और अपने उत्पादों को अन्य औद्योगिक उद्यमों या कृषीय उत्पादों से स्वतंत्र अनुबंधों द्वारा प्राप्त करें। इसके कारण निर्णय लेने की प्रक्रिया विकेंद्रित हुई, प्रतियोगिता बढ़ी, वाणिज्यीकरण बढ़ा और निजी उद्यमियों के एक नए वर्ग का जन्म हुआ। इससे पूंजीवादी मूल्यों और नैतिकताओं को बढ़ावा मिला जिससे सहकारिता और राज्य के बड़े उद्योगों पर भी प्रभाव पड़ा जिसमें अभी भी ज़्यादा उत्पादन होता था।

5.6.1 समाजवाद की ओर संक्रमण की रणनीति के रूप में नई आर्थिक नीति

युद्ध साम्यवाद के ज़रिए जहां एक ओर बोल्शेविकों ने तात्कालिक दिक्कतों पर विजय प्राप्त की और क्रांति को मज़बूत बनाया वहीं नई आर्थिक नीति के द्वारा आने वाले वर्षों में आर्थिक समृद्धि प्राप्त की गई और अधिकांश किसानों का भरोसा हासिल करने में मदद मिली। 1918-21 की नीतियों के समान इस नीति का स्वरूप भी अस्थाई था और यह भविष्य की ओर बढ़ने का एक साधन मात्र था।

1920 के आरंभ में अकाल का प्रभाव दिखाई पड़ता है परंतु इसके बाद अर्थव्यवस्था धीरे-धीरे सुधरने लगी और 1923 तक यह स्तर युद्ध-पूर्व स्तर के एक तिहाई हिस्से तक पहुंच गई। परंतु यदि युद्ध साम्यवाद चरण से तुलना की जाए तो 1928-29 तक कृषि उत्पादन में लगभग 40%, कुल बोये क्षेत्र में 45% और अनाज क्षेत्र में 39-43% की वृद्धि हुई। उद्योग में हुई वृद्धि की तुलना में यह वृद्धि दर ज़्यादा थी जिसके परिणामस्वरूप औद्योगिक वस्तुओं के दाम बढ़े और उद्योग और कृषि उत्पादों के मूल्य स्तर का अंतर बढ़ा जिसमें उद्योग फायदे की स्थिति में थे, हालांकि इससे बाजार संबंधी दिक्कतें पैदा हुईं। इससे शहर और गांव, किसानों और मज़दूर के बीच होने वाली संभावित टक्कर को रोकने के लिए उद्योगों पर दाम कम करने हेतु दबाव डाला गया। परंतु यह समस्या इतनी जल्दी सुलझने वाली नहीं थी क्योंकि नई आर्थिक नीति में कृषि निजी क्षेत्र में थी और अधिकांश उद्योगों पर अभी भी राज्य का एकाधिकार था।

दूसरी ओर नई आर्थिक नीति से आए बदलावों से समस्याएं और सामाजिक अंतर्विरोध सुलझ न सके क्योंकि इनका उद्भव केवल युद्ध परिस्थिति या किसी खास नीतियों के

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

कारण नहीं हुआ था बल्कि इसकी जड़े व्यापक सामाजिक अंतर्विरोधों में निहित थी। जो इसलिए था क्योंकि किसानों की संख्या ज़्यादा थी जबकि क्रांतिकारी मज़दूरों ने उनके बीच में समाजवाद के निर्माण का आह्वान किया था। व्यक्तिगत कृषि अर्थव्यवस्था में वर्ग शोषण की गुंजाइश तो कम थी परंतु इसके बावजूद यह बुर्जूआ संबंधों की ही अभिव्यक्ति थी। जब तक भूमि पर निजी अधिकार रहा, एक परिवार निजी तौर पर काम करता रहा और जबतक निजी तौर पर आमदनी होती रही, तब तक समाजवादी ढर्रे से खेती करने में किसानों को कोई विशेष रुचि नहीं थी। नई आर्थिक नीति में सहकारी खेती की बात सामने आई और किसानों को खुद व खुद सामूहिकता के लाभ दिखाई पड़ने लगे। परंतु ट्रैक्टर खरीदने या खेतों पर एक साथ काम करने से समस्या का समाधान न हो सका क्योंकि व्यक्तिगत खेतिहरों के समान सहकारी समितियों और सामूहिक संगठन भी उसी बाज़ार और मुनाफे के सिद्धांत पर काम कर रहे थे।

बाज़ार के प्रवेश और इसके परिणामस्वरूप कृषि का स्तरीकरण होना तथा निजी उद्यमियों का उदय होना साम्यवादी दर्शन में अंतर्निहित समतावादी तत्व से मेल नहीं खाता था। स्वैच्छिकता को आर्थिक प्रोत्साहन द्वारा प्रतिस्थापित किया गया। इसमें सामूहिकता श्रम के सामाजिक लाभों को तो बढ़ावा नहीं मिला बल्कि इसमें सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए व्यक्तिवादी कृषक सिद्धांत को ही बढ़ावा मिला।

विकसित समाजवाद, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपनी ज़रूरत के अनुसार वस्तुएं/लाभ प्राप्त कर सकता था, के लिए औद्योगिक उत्पादन को बढ़ाने की ज़रूरत थी। नई आर्थिक नीति में अर्थव्यवस्था के व्यक्तिगत तथा निजी क्षेत्र से समाजवादी क्षेत्रों की ओर संसाधनों के हस्तांतरण की गुंजाइश कम थी। चूंकि सोवियत रूस उपनिवेशों के शोषण के पक्ष में नहीं था। इसलिए यह एक बड़ी समस्या थी। इस नई आर्थिक नीति के परिवर्तनों के द्वारा सोवियत संघ को एक विकसित समाजवादी समाज में परिवर्तित करना संभव नहीं था। इसके अलावा इसके द्वारा लोगों के जीवन स्तर में भी सुधार नहीं किया जा सकता था तथा एक अधिक मानवीय, वैज्ञानिक और समता उन्मुख मनुष्य का निर्माण भी संभव नहीं था। जब व्यापार इकाइयों, सोवियतों और अन्य लोकप्रिय संगठनों को ज़्यादा अधिकार दिए गए तब तक उनमें स्वेच्छा की बजाए आर्थिक लाभ की भावना घर कर चुकी थी। इस बृहद परिप्रेक्ष्य में हमें भविष्य में दल में होने वाली बहसों, सामूहिकता अभियान और पार्टी तथा लोकप्रिय संगठनों के बीच होने वाले टकरावों को देखना होगा।

5.7 समाजवाद के सांस्कृतिक आयाम

समाजवादी यह मानते हैं कि आरंभिक वर्षों में उन्हें कोई खास उपलब्धि हासिल नहीं हुई परंतु रूस में हुई क्रांति के पहले जो स्थिति थी और उस समय पूंजीवादी विश्व की जो प्राथमिकताएं और नैतिकताएं थी उन्हें देखते हुए यह कहा जा सकता है कि उन्होंने काफी उपलब्धियां हासिल की थीं।

आरंभिक समाजवादी राज्य ने बड़े ही गौरवपूर्ण ढंग से सभी लोगों को रोज़गार देने, मुफ्त सेवाएं उपलब्ध कराने, संस्कृति और सांस्कृतिक विकास का समान अवसर प्रदान करने और महिलाओं को समानता देने का वादा किया था। बोल्शेविक समाजवादी क्रांति ने सभी नागरिकों को अच्छा जीवन जीने का वैधानिक अधिकार देकर स्वतंत्रता के आयाम को विस्तार दिया था तथा सामाजिक तथा आर्थिक समानता की बात सामने रखी थी। रोज़गार का अधिकार और सभी को उनके कार्य के अनुसार महत्व देने के सिद्धांत को स्वीकार कर इस समानता को ही कार्यान्वित किया गया। मुक्ति और अधिकारों का क्षेत्र विस्तृत हुआ जिसमें भूख से मुक्ति से लेकर अवसर की समानता को शामिल किया गया

और वास्तविक अर्थों में लोगों को समान रूप से मनोरंजन की सुविधा प्रदान की गई तथा सांस्कृतिक गतिविधियों में शामिल किया गया। अल्पसंख्यकों और महिलाओं समेत सभी लोगों को समान अवसर उपलब्ध कराने के लिए निजी सम्पत्ति का उन्मूलन और कल्याणकारी ढ़ांचे का निर्माण किया गया। लोगों के बीच आर्थिक समानता स्थापित कर क्रांति ने संभ्रात और लोक संस्कृति के बीच की खाई को पाटना चाहा और साहित्य, सिनेमा, कला और संगीत के क्षेत्र में कामगार लोगों के महत्वपूर्ण योगदान को संभव बनाया और इसके फलस्वरूप अल्पसंख्यकों के संगीत और भाषाओं का पुनरुत्थान हुआ। स्वतंत्रता के इस क्षेत्र के विस्तार के कारण बाद के वर्षों में उच्च कोटि की कलात्मक कृतियों के साथ-साथ बड़े पैमाने पर पुस्तकें प्रकाशित हुईं। इस क्रांति ने दुनिया के सामने आधुनिकता का एक मौलिक विकल्प सामने रखा।

इन उपलब्धियों को प्राप्त करने में कई प्रकार की बाधाएं सामने आईं। आरंभिक वर्षों में काफी कठिनाइयों का समाना करना पड़ा। सभी प्रकार की नीतियों का केंद्र बन गई और स्थानीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर जनता की भागीदारी बढ़ी। इसने पदों और विशेषाधिकारों का उन्मूलन करना चाहा और भागीदारीपूर्ण जनतंत्र का पैमाना ही बदल डाला।

इन उपलब्धियों को प्राप्त करने में कई प्रकार की बाधाएं सामने आईं। आरंभिक वर्षों में काफी कठिनाइयों का समाना करना पड़ा। सभी प्रकार की नीतियों और राजनैतिक जीवन को गृह युद्ध और उससे जुड़ी गतिविधियों ने प्रभावित किया। परंतु क्रांति ने आरंभिक वर्षों में अपने लिए एक मानदंड स्थापित कर लिया था जिसका मूल्यांकन दूसरों को नहीं बल्कि स्वयं क्रांतिकारियों और सम्पूर्ण सोवियत जनता को करना था।

5.8 कॉमिन्टर्न

बोल्शेविकों ने हमेशा से रूसी क्रांति को विश्व समाजवादी क्रांति के अंग के रूप में देखा है। क्रांति की शुरुआत होने से पहले बोल्शेविक और अन्य रूसी क्रांतिकारियों का मानना था कि रूस में क्रांति होने के बाद पश्चिम यूरोप में समाजवादी क्रांति होगी। उनका यह मानना था कि एक बार क्रांति की शुरुआत हो जाने पर पूरा यूरोप उनके पथ का अनुसरण करेगा। पूरे विश्व में मज़दूरों के हितों की एकता का मार्क्सवादी सिद्धांत और एक शोषण रहित दुनिया की उनकी समाजवादी दृष्टि उनके अंतर्राष्ट्रीयवाद का आधार बना। इस अंतर्राष्ट्रीयवाद को अंतर्राष्ट्रीय समाजवाद का रूप दिया गया।

जब पश्चिम यूरोप में सामाजिक जनतांत्रिक दलों ने मज़दूरों के पक्ष में शासक वर्ग का विरोध करने से इनकार कर दिया (जैसाकि बोल्शेविकों का मानना था) तो बोल्शेविक उनसे अलग हो गए और उन्होंने अपना नाम बदलकर साम्यवादी रख लिया और तदनुसार एक नए अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी संघटन का निर्माण किया। बोल्शेविक का मानना था कि उनकी क्रांति कहीं और जन्म लेगी क्योंकि रूस एक पिछड़ा राज्य था और उसमें विकसित समाजवाद को संभालने की शक्ति नहीं थी। अंतर्राष्ट्रीय साम्यवाद को इस क्रांति के अगुआ के रूप में देखा गया।

अंतर्राष्ट्रीय गृह युद्ध के माहौल में कॉमिन्टर्न का जन्म हुआ। इसकी सदस्यता के लिए जो शर्तें रखी गईं तथा जो नीतियां बनाई गईं उससे राष्ट्रीय आत्म निर्धारण, पूर्व रूसी क्षेत्र में राष्ट्रीयता के प्रश्न और विश्व क्रांति के लिए रणनीति बनाने संबंधी बोल्शेविक के नज़रिए का पता चलता है। इससे खासतौर पर राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों के परिप्रेक्ष्य में किसानों के साथ बोल्शेविक के अनुभव का भी पता चलता है।

नवम्बर 1917 में जैसे ही बोल्शेविकों ने आत्म निर्धारण के रूप में संबंध विच्छेद के अधिकार की घोषणा की वैसे ही मित्र राष्ट्रों ने सशस्त्र आक्रमण के लिए इसे मुद्दा बना

लिया। इस समय कॉमिन्टर्न ने विभिन्न क्षेत्रों में मज़दूरों और किसानों के अधिकारों का निर्धारण किया। इसने यूरोप और सोवियत रूस में चल रहे राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों और साम्यवादी दलों के बीच एक संयुक्त मोर्चा बनाने का विचार रखा। इन क्षेत्रों में साम्यवादियों की रणनीति कॉमिन्टर्न से काफी प्रभावित थी जहां राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों को अपने देश में न केवल साम्राज्यवादी शक्तियों और सामंतों के खिलाफ बल्कि बुर्जूआ वर्ग के विरोधी के रूप में भी देखा जा रहा था। राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों में कृषि क्रांति को आधार माना गया जिसमें मज़दूरों को एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी थी। 1920 के दशक में नई आर्थिक नीति के तहत कृषक वर्ग के स्वरूप और स्वभाव में परिवर्तन आया और बोल्शेविकों के संघर्ष में भी परिवर्तन शुरू हुआ; वैसे ही राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों में सामाजिक शक्तियों के प्रति कॉमिन्टर्न नीति में भी बदलाव आ गया। कॉमिन्टर्न ने इन देशों में साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष करने में बुर्जूआ वर्ग की 'सकारात्मक' भूमिका को मान्यता प्रदान की और उसे अपना समर्थन दिया। 1920 के दशक में यह नीति कायम रही और कई एशियाई देशों में साम्यवादी दल कायम किए गए। खासतौर पर चीन के साथ मज़बूत संबंध बने और चीन, भारत, तुर्की और अफगानिस्तान में साम्यवादी समूहों की आरंभिक रणनीतियां कॉमिन्टर्न नीतियों से बेहद प्रभावित हुईं। इन देशों के साम्यवादी सदस्यों को कॉमिन्टर्न में भी शामिल किया गया।

बोध प्रश्न 3

1) नई आर्थिक नीति युद्ध साम्यवाद से किन अर्थों में भिन्न थीं?

....

....

....

....

....

2) कॉमिन्टर्न पर एक टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

5.9 सारांश

इस इकाई में समाजवादी दुनिया के निर्माण से जुड़े तीन महत्वपूर्ण पक्षों पर विचार किया गया है: समाजवादी क्रांति के पहले की परिस्थिति, समाजवादी क्रांति का निर्माण, और अपनी सभी सीमाओं और समस्याओं के साथ समाजवादी राज्य की कार्य पद्धति।

जैसाकि आप जानते हैं, उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोप में एक बड़ा बुद्धिजीवी वर्ग मानव सभ्यता के विकास के लिए समाजवाद को एक प्रमुख दृष्टिकोण मानता था। अपने आप में अनूठी समाजवादी क्रांति की शुरुआत रूस में 1917 में हुई। इस इकाई में रूस में क्रांतिकारी परिस्थितियों और क्रांति की चर्चा की गई है। क्रांति तीन चरणों से होकर

गुजरी. 1905 में संसद के निर्माण से लेकर फरवरी 1917 में उदारवादी बुर्जुआ शासन के निर्माण तक और अन्ततः अक्टूबर 1917 में बोल्शेविकों के नेतृत्व में सोवियत मज़दूरों द्वारा सत्ता प्राप्ति।

नए समाजवादी राज्य को कई प्रकार की समस्याओं और विरोधों का सामना करना पड़ा। सम्पूर्ण पूंजीवादी विश्व इसके खिलाफ था और रूस में पुरानी व्यवस्था के हिमायतियों ने गृह युद्ध छेड़ रखा था। 1918 से लेकर 1921 तक का समय युद्ध साम्यवाद का समय था। 1921 से एक नया चरण आंरभ हुआ जिसे नई आर्थिक नीति के रूप में जाना जाता है जो 1928 तक कायम रहा। परंतु अभी तक नया समाजवादी राज्य मज़बूत नहीं बन सका था। अगली इकाई में हमने 1928 के बाद समाजवादी राज्य के विकास की चर्चा की है।

5.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) इसमें आप रूस में उदारवादी संविधानवाद और संसदीय प्रजातंत्र की अनुपस्थिति की चर्चा कर सकते हैं। देखिए भाग 5.2।

2) इसमें आप क्रांति पूर्व रूस में समाजवादी क्रांतिकारियों, उदारवादी और समाजवादी जनतांत्रिकों की चर्चा कर सकते हैं। देखिए उप-भाग 5.2.4।

बोध प्रश्न 2

1) 1905 के बाद क्रांति के विभिन्न चरणों का उल्लेख कीजिए। देखिए भाग 5.3।

2) कानून और लोकप्रिय उपायों से आए बदलावों का ज़िक्र कीजिए। देखिए 5.4।

3) इसमें आप पूर्व भूमिपतियों और पूंजीवादी देशों के विरोध के साथ.साथ क्रांति के तुरंत बाद पनपे आर्थिक संकट से शासन के समक्ष आनेवाली चुनौतियों और नए समाजवादी राज्य द्वारा युद्ध साम्यवाद की स्थापना का उल्लेख कीजिए। देखिए भाग 5.5।

बोध प्रश्न 3

1) पढ़िए भाग 5.5 और 5.6 तथा राष्ट्रवाद, कृषि तथा उद्योग संबंधी सरकारी नीति में आए परिवर्तनों की चर्चा कीजिए।

2) देखिए भाग 5.8।